व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण में प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की विशेषताओं की भूमिका (Role of Perceiver's Characteristics in Person Perception)

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण में एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की विशेषताओं तथा उससे सम्बन्धित सूचनाओं के आधार पर अपना निर्णय लेता है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्यक्षीकरण पूर्णत: दूसरे व्यक्ति पर ही निर्भर नहीं होता है बल्कि इस निर्णय में प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की अपनी विशेषताओं का भी बहुत अधिक प्रभाव होता है। इस तरह प्रत्यक्षीकरण में प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. **प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की आयु** (Age of Perceiver)–प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की आयु के विषय में अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की आयु जितनी अन्य व्यक्ति से कम होगी व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण के मूल्यांकन में उतना ही अन्तर होगा।

2. **मूर्त्तता एवं अमूर्त्तता** (Concretencess and Abstractness)–मूर्त्तता एवं अमूर्त्तता के विषय में अध्यनन के पश्चात् यह ज्ञात हुआ है कि जिस व्यक्ति में अमूर्त्तता की जितनी अधिक मात्रा होती है अर्थात् जो व्यक्ति जितना अधिक पढ़ा-लिखा होता है वह व्यक्ति उतने ही उचित ढंग से प्रत्यक्षीकरण के गुणों को संगठित कर लेता है और जिस व्यक्ति में मूर्त्तता की योग्यता होती है वह व्यक्ति किसी निर्णय को लेते समय साक्ष्यों पर अधिक विश्वास करते हैं इसलिए वे अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित जैसे आयामों पर जल्दी से निर्णय ले लेते हैं।

3. **प्रत्यक्षीकरण का व्यक्तित्व** (Personality of Perceiver)–इस विषय में **सोडल फ्रीमैन** और **लिपेट** ने मिलकर एक अध्ययन किया जिसके माध्यम से यह ज्ञात हुआ है कि जिन प्रत्यक्षीकरणकर्त्ताओं का व्यक्तित्व तानाशाह प्रकार का होता है तो वह जो प्रत्यक्षीकरण करता है वह अपेक्षाकृत अधिक शुद्ध होता है। इसी प्रकार **रोबिनावित्स** तथा **क्रीकेट** के द्वारा किये गये अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया कि तानाशाह प्रकृति का प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता प्रत्यक्षीकृत व्यक्ति को अपने ही समान समझता है।

4. **अन्तर्निहित व्यक्तित्व** (Implicit Personality)–प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की निजी विचारधारा पर आधारित पक्षपात का सम्बन्ध अन्तर्निहित व्यक्तित्व से है। इस सन्दर्भ में जो अध्ययन किये गये उनमें यह देखा गया कि प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता के द्वारा जिस व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है उसके सम्बन्ध में उसकी पक्षपातपूर्ण निजी विचारधारा होती है जो प्रत्यक्षीकरण को बहुत अधिक प्रभावित करती है। इस सन्दर्भ में **ग्रॉस** ने कॉलेज की छात्र-छात्राओं के सम्बन्ध में जो अध्ययन किए हैं उसमें उन्होंने अनेक प्रत्यक्षीकरण पर अन्तर्निहित व्यक्तित्व का प्रभाव पाया।

5. **लिंग का प्रभाव** (Influence of Sex)–प्रत्यक्षीकरण पर प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता के लिंग की विशेषता का भी बहुत अधिक योगदान होता है। इस विषय में जो अध्ययन किये गये उससे यह ज्ञात होता है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक रूढ़िवादी मूल्यांकन करती हैं।

अवधारणा निर्माण एवं प्रबन्धन
(IMPRESSION FORMATION AND MANAGEMENT)

सीकोर्ड तथा **बॉकमैन** ने प्रत्यक्षीकरण में होने वाली धारणा के निर्माण को समझाया है जो निम्न प्रकार से है–

1. **प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता के चरों को स्पष्ट करना**–किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त हो जाने के पश्चात् प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता दूसरे व्यक्ति के प्रति जो भावनाएँ तथा संज्ञान बनाता है, कार्यों का जो मूल्यांकन करता है तथा उसके सम्बन्ध में जो विचार बनाता है वह उन सभी को पूर्णतया स्पष्ट करता है।

2. **सूचनाओं का निर्माण**–जब हमारा किसी दूसरे व्यक्ति से पहली बार परिचय होता है तो उस समय उसके सम्बन्ध में हम बहुत कम जानकारी रखते हैं तथा परिचय के माध्यम से जो आपस में बातों का आदान-प्रदान होता है उससे हमें उस व्यक्ति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। इसी को उस व्यक्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होना कहते हैं। प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता को ये सूचनाएँ व्यक्ति की शारीरिक बनावट, उसके हाव-भाव उसके गतिशील व्यवहार तथा वाचिक व्यवहार के माध्यम से प्राप्त होती है।

भूमिकाओं में पूर्ण रूप से संसक्त होता है। संसक्ति के अभाव में व्यक्ति सम्बन्धित भूमिका के सूक्ष्म पक्षों को समझ नहीं पाता। फलतः वह श्रेष्ठ भूमिका नहीं कर सकता।

2. **वास्तविकीकरण एवं आदर्शीकरण** (Realization and Idealization)—व्यक्ति द्वारा किसी भी भूमिका का निर्वाह करके आकर्षक तथा श्रेयस्कर छवि प्रक्षेपित करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि व्यक्ति को इस बात का पूर्ण रूप से ज्ञान होना चाहिए कि समाज की व्यक्ति से क्या अपेक्षाएँ हैं? भूमिका निर्वाह में इस ज्ञान का होना अत्यन्त आवश्यक है।

3. **उपयुक्त उपाग्र** (Proper Front)—गॉफ्फमैन के शब्दों में उपाग्र वह है जो प्रथम छवि का आधार प्रस्तुत करता है। उपाग्र के तीन अवयव होते हैं—परिवेश, निजी परिवेश तथा दिखावट एवं तौर-तरीके। परिवेश में—व्यक्ति का आवास तथा उसकी स्वच्छता, निजी परिवेश—में व्यक्ति की वेशभूषा, उसका व्यवसाय, तथा दिखावट व तौर-तरीके के अन्तर्गत—केशविन्यास, मुख की आकृति, खड़े होने का तरीका आदि शामिल हैं। श्रेष्ठ छवि में प्रबन्धन के दृष्टिकोण से विभिन्न प्रकार के पेशों में कार्यरत व्यक्तियों, जैसे—चिकित्सकों, प्राध्यापकों तथा अधिवक्ताओं के लिए उपर्युक्त उपाग्र का होना अत्यन्त आवश्यक है।

4. **सायुज्यकरण** (Mystification)—कुछ भूमिकाएँ इस प्रकार की होती हैं कि उनमें अन्तःक्रिया करते समय कर्म व लक्षित सहभागियों के मध्य एक निश्चित सीमा तक दूरी बनाये रखना आवश्यक होता है। ऐसी भूमिकाओं में पूर्ण संशक्ति के साथ औपचारिक व्यवहार ही उत्तम समझे जाते हैं, जिस कारण व्यक्ति अपनी भूमिका का प्रभावशाली निष्पादन नहीं कर पाता है।

आत्म-अभिव्यक्ति
(SELF EXPRESSION)

अपने विचारों, भावनाओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं, अभिवृत्तियों तथा रुचियों को एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के समक्ष एक सीमा से ही प्रकट कर सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने विषय में किसी दूसरे व्यक्ति को उतना ही बताता है जितना कि अपनी श्रेष्ठ छवि बनाने के लिए आवश्यक हो। कई स्थितियों में आत्म अनावरण नहीं किया जाता है क्योंकि अनावृत पक्षों की जानकारी कर लेने वाला व्यक्ति उसका दुरुपयोग करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है जिसके कारण उस व्यक्ति में समाज द्वारा अस्वीकृत कर दिये जाने की आशंका उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्ति की कई भावनाएँ, सांवेगिक अनुभव तथा विचार ऐसे होते हैं जो अंतरंग होने के बाद भी अभिव्यक्त हो जाते हैं। दूसरे लोगों के साथ अंतरंग भावनाओं तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान ही आत्म-अनावरण कहलाता है। **डर्लेगा** तथा **ग्रजलेक** (1979) के अनुसार, आत्म-अनावरण आवश्यक होता है। इससे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इसके निम्न पाँच उद्देश्य प्रमुख हैं—

1. **आत्म-स्पष्टीकरण** (Self Clarification)—जब दो व्यक्ति आपस में एक-दूसरे से अपनी अंतरंग समस्याओं, भावनाओं तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं तो ऐसी स्थिति में दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। आपस में एक-दूसरे की समझ अत्यधिक गहरी हो जाती है तथा अपने बारे में भी अधिक स्पष्टता या जानकारी प्राप्त हो जाती है।

2. **सामाजिक नियन्त्रण** (Social Control)—अन्तःक्रिया जगत् में नियन्त्रण रखने के उद्देश्य से व्यक्ति अपने अंतरंग विचारों तथा अनुभवों को छिपाये रखता है तथा सिर्फ ऐसे विचारों तथा अभिवृत्तियों को विस्तृत रूप से व्यक्त करता है जिसके फलस्वरूप समाज में उपस्थित व्यक्तियों की नजरों में उसकी छवि और अधिक आकर्षक बने।

3. **आत्म-अभिव्यक्ति** (Self Expression)—आत्म-अभिव्यक्ति से तात्पर्य ऐसे सांवेगिक अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने से है जो उसे दुःख एवं तनाव की स्थिति प्रदान करते हैं तथा मन को बेचैन कर देते हैं। ऐसे अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के सामने व्यक्त करने से मन हल्का तथा स्वच्छ हो जाता है।

4. **सामाजिक वैधीकरण** (Social Validation)—जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करता है तो दूसरा व्यक्ति उस व्यक्ति के विचारों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है। उस प्रतिक्रिया के आधार पर व्यक्ति बहुत ही सरलता से यह निर्धारित कर सकता है कि उसके विचार सामाजिक दृष्टि से उचित हैं या नहीं।

5. **सम्बन्ध विकास** (Relationship Development)—दूसरे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध का प्रारम्भ करने तथा उसे अंतरंग बनाने के लिए व्यक्तिगत सूचनाओं एवं निजी विचारों को प्रकट करना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तरीका है। प्रेम सम्बन्ध में व्यक्ति अपने जीवनवृत्त के आदान-प्रदान से प्रारम्भ कर सामान्य अभिरुचियों, अभिवृत्तियों एवं कामनाओं की जानकारी प्राप्त करता है।

आत्म-अनावरण अंतरंग स्थापित करने की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है। ऐसा करने में अंतरंगता में वृद्धि होती है। कभी-कभी ऐसे अनावरण में अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाती है। **बेलेरियन डर्लेगा** (1984) ने बताया कि आत्म-अनावरण से अनेक प्रकार के सामाजिक संकट उत्पन्न होते हैं। इनमें चार प्रकार के संकट प्रमुख हैं—

1. **नियन्त्रण की हानि** (Loss of Control)—अंतरंगता के सम्बन्ध में व्यक्ति अपनी बहुत-सी कमजोरी अपने मित्र को बता देता है, जिसका दुरुपयोग करके उसका मित्र उसे हानि पहुँचाता है तथा उस पर वह अपनी प्रभाविता स्थापित कर उसे अपने नियन्त्रण में रखता है, जबकि अनावृत करने वाला व्यक्ति दूसरे पर अपना नियन्त्रण खो देता है।

2. **अनिच्छा** (Indifference)—किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कोई व्यक्ति वैयक्तिक सूचनाओं का सर्वप्रथम आदान-प्रदान करता है। कभी-कभी दूसरा व्यक्ति अन्योन्याता की प्रतिक्रिया करता है तथा एक-दूसरे से अंतरंगता विकसित होती है। कभी-कभी दूसरा व्यक्ति किसी की निजी सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद सम्बन्ध स्थापित करने में अनिच्छा प्रदर्शित कर सकता है, क्योंकि अनावृत्त सूचना को व्यक्ति का अशोभनीय गुणधर्म माना जाता है।

3. **विश्वासघात** (Betrayal)—व्यक्ति कभी-कभी अपने मित्रों को अपने से सम्बन्धित गोपनीय सूचनाएँ बता देता है तथा उस पर पूर्ण विश्वास रखता है कि उसका मित्र उसके द्वारा दी गयी सूचना को किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बतायेगा। ऐसी स्थिति में कभी कोई मित्र उसके साथ विश्वासघात करते हुए सूचना किसी अन्य व्यक्ति को बता सकता है।

4. **अस्वीकृत** (Non-acceptance)—व्यक्ति के निजी जीवन से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी से सम्भव है कि लोग उसे अस्वीकार कर दें।

समाज एवं व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप
(NATURE OF SOCIAL AND PERSON PERCEPTION)

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की प्रमुख भाषा **सीकोर्ड** और **बैकमेन** की है। इन दोनों के मतानुसार, "व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण उस प्रक्रिया पर केन्द्रित है जिसके द्वारा दूसरे व्यक्तियों के सम्बन्ध में धारणाएँ, मत या अनुभूतियाँ बनती हैं।" व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की इस परिभाषा से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति की संवेदनात्मक अनुभूति तथा अन्य व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाओं पर निर्भर होता है।

1. **प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता की स्वानुभूति की योग्यता**—प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम दूसरे व्यक्ति के प्रभाव का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए—सामान्यतः हम अपने दैनिक जीवन में यह देखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति हमसे पहली बार मिलता है तो उस समय उस व्यक्ति के विषय में हम कुछ भी जानते ही नहीं या बहुत कम जानते हैं। जब उस व्यक्ति से हमारा परिचय होता है तो उसके साथ हमारी सीमित अनुक्रिया तथा पारस्परिक प्रक्रिया होती है अर्थात् परिचय के माध्यम से हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर ही हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर ही हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा व्यवहार की धारणाएँ बना लेते हैं।

2. **प्रत्यक्षीकरण में निरीक्षण की योग्यता**—निरीक्षण करने की योग्यता व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की दूसरी विशेषता है। निरीक्षण की योग्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षीकरणकर्त्ता दूसरे व्यक्ति की अन्तःक्रिया के सम्बन्ध में अनुमान लगाता है। प्रत्यक्षीकरण की इस योग्यता को चरित्र पढ़ने की योग्यता भी कहा जाता है।

प्रत्यक्षीकरण के विषय में **आलफोर्ट** का यह मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में अन्य व्यक्ति के गुणों के सम्बन्ध में निर्णय लेने की क्षमता होती है, परन्तु यह योग्यता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न होती है।

आत्म-सम्प्रत्यय (प्रत्यक्षीकरण) की परिभाषाएँ
(DEFINITIONS OF SELF-CONCEPT PERCEPTION)

सिग्मण्ड फ्रायड ने आत्म-सम्प्रत्यय के लिए अहं शब्द का प्रयोग किया और उसने आत्म-सम्प्रत्यय को व्यक्तित्व का एक संगठित भाग माना। सिग्मण्ड फ्रायड के मतानुसार अहं एक मूल्यांकन करने वाला अभिकर्त्ता है जो बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से उन व्यवहारों को करता है जो व्यक्ति के आनन्द को अधिक तथा पीड़ा को कम बनाने में सहायक होता है।

विलियम जेम्स ने व्यक्ति बोध के विषय में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि इसमें "व्यक्ति का मन तथा शरीर, परिधान व आवास, पति-पत्नी तथा उसके बच्चे, सम्पत्ति, ख्याति आदि सम्मिलित होते हैं।" इस प्रकार आत्म-सम्प्रत्यय के अनेक पक्ष या अवयव हैं।

मीड तथा **सलीवन** ने बोध सम्प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि व्यक्ति स्वयं को उसी रूप में प्रत्यक्ष समझता है जिस रूप में दूसरे लोग उसे देखते हैं। इसको **मीड** तथा **सलीवन** ने **प्रतिबिम्ब मूल्यांकन का नियम** कहा है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि सभी परिभाषाएँ एकल व्यक्ति के अन्तर के विचारों, भावनाओं तथा अभिप्रेरणों के विशिष्ट संगठन पर बल देती हैं।

गॉफ्फमैन ने छवि प्रबन्धन व रंगमंच के पात्रों के निष्पादन को रेखांकित करते हुए कहा है कि रंगमंच के कुशल कलाकारों की ही तरह सजग लोग भी सामाजिक अन्त:क्रियाओं में उत्तम तथा अत्यन्त उपयुक्त निष्पादन कर सकते हैं। इसके लिए व्यक्ति को कुछ विशेषताओं को अपने व्यवहार में विकसित करना चाहिए। गॉफ्फमैन महोदय ने व्यक्ति में निम्न चार विशेषताओं को विकसित करने की सलाह दी है—

1. **भूमिका में संसक्ति** (Involvement in Role)—प्रत्येक की अपनी अलग-अलग पहचान होती है। उसे अपने सामाजिक जीवन में कई अलग-अलग भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। जैसे—छात्र, मित्र, पति, पिता, भाई, अध्यापक आदि। इन भूमिकाओं का कुशल निर्वाह व्यक्ति द्वारा तभी सम्भव है जब वह इन